<u>कॉलेज/विभाग का नाम:-</u> मधेपुरा कॉलेज मधेपुरा बीएड विभाग

<u>विषय:-</u> Childhood and Growing Up (बाल्यावस्था एवं उसका विकास)

7. विषय:- भाषा की सामाजिक – सांस्कृतिक विविधताएं, महत्व, संचार में अंतर

भारत सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं से संपृक्ति राष्ट्र है। प्रत्येक समाज में अपनी रीतियों, कार्य-प्रणालियों, प्रभुत्व और पारस्परिक सहायता, विविध समूहों और श्रेणियों, मानव व्यवहार के नियंत्रण और स्वतंत्रताओं की व्यवस्था होती है। यह व्यवस्था गतिशील अवश्य होती है। प्रत्येक समाज की भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियां दूसरे समाज से भिन्न या पृथक् हो सकती है। प्रत्येक समाज की विशिष्ट संस्कृति होती है, जो उसके लिए आदर्श होती है। खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, परंपराएं, प्रथाएं, वेशभूषा, धर्म, दर्शन, कला, विज्ञान और व्यवहारों के साथ-साथ भाषा भी संस्कृति का अंग है। एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र में विशेष सांस्कृतिक प्रतिमान होते हैं। भाषा भी एक प्रतिमान है। भाषा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है। सीखने की प्रक्रिया में बालक अपने सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार भाषा को सीखता, ग्रहण करता और आत्मसात करता है। प्रत्येक समाज अपनी इक्छाओं, संवेगों, भावनाओं और आवश्यकताओं को भाषा के माध्यम से मूर्त रूप देता है।

विविध सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिमानों के कारण भारत एक बहुभाषा-भाषी देश है। सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं का प्रभाव भाषा पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है:-

- विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भाषाएं बोली जाती हैं।
- अलग-अलग सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों की भाषा को बोलने का लहजा अलग अलग होता है। उदाहरणार्थ उत्तर प्रदेश और बिहार दोनों देशों में हिंदी बोली जाती है, परंतु बोलने का लहजा अलग होता है।
- जो माता-पिता शिक्षक तथा अच्छी सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले होते हैं, उन्हें उनके बालकों का शब्द-भंडार सुंदर होता है तथा उच्चारण शुद्ध होता है।
- जो परिवार निम्न सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति वाले होते हैं, वह बालकों के भाषा विकास को महत्व नहीं दिया जाता। माता-पिता स्वयं गंदे शब्दों का उच्चारण करते हैं तो उनके अनुकरण से उनके बच्चे भी भ्रष्ट उच्चारण करने लगते हैं।
- जिन परिवारों में माता-पिता कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं, वहां बालकों का भाषा विकास ठीक से नहीं हो पाता। भाषा विकास की गति बहुत धीमी हो जाती है, क्योंकि एक ही वस्तु के लिए दो अलग-अलग शब्दों के प्रयोग से बालक को याद करने में कठिनाई होती है।
- परिवार का सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण जितना विस्तृत होता है, बालक का शब्द भंडार उतना ही विस्तृत बनता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि बालक का भाषा विकास के निम्न आयामों पर उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव पड़ता है:-

- भाषा सीखने की प्रक्रिया पर,
- उच्चारण पर,
- लहजे पर,
- संप्रेषण पर,
- भाषा विस्थापन पर और,
- भाषाई अभिव्यक्ति पर।

भाषा का महत्व:-

1. **भाषा भावाभिव्यक्ति का साधन है**– भाषा विचार विनियम का एक साधन है। मनोभावों की अभिव्यक्ति के प्रत्यन ने भाषा को जन्म दिया जिसके माध्यम से मानव अपने विचारों में सुख-दुख को एक दूसरे व्यक्ति से कहता है तथा सुनता है। इसी भाषा के माध्यम से आज मनुष्य अपने भावभिव्यक्ति के साथ-साथ विचार विनियम करता है।

2. **भाषा मानव विकास का मूलाधार है**– भाषा की शक्ति के माध्यम से ही मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ है। वैसे तो संसार के प्राणियों के पास भी अपनी-अपनी भाषाएं हैं परंतु विचार प्रधान भाषा मनुष्य के पास ही है। भाषा के अभाव में मनुष्य विचार नहीं कर सकता और विचार के अभाव में वह अपने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सकता।

3. **भाषा मानव सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान है**– जैसे-जैसे मानव समाज में अपनी भाषा में प्रगति की, वैसे-वैसे उनकी सभ्यता एवं संस्कृति में विकास हुआ। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति हुई और श्रेष्ठ साहित्य का सृजन हुआ। तब ही किसी जाति, समाज व राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति का अकालपन उसके साहित्य से किया जाता है। अतः भाषा की कहानी ही मानव सभ्यता एवं संस्कृति की कहानी है।

4. **विचार शक्ति का विकास**– भाषा के बिना विचारों को याद रखना असंभव है, वह शक्ति और विचार शक्ति का विकास भी असंभव ही है।

5. **ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है**– भाषा के माध्यम से ही पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को सामाजिक विरासत के रूप में अब तक का समस्त संक्षिप्त ज्ञान भावी पीढ़ी को सौंप दी है और यही क्रम निरंतर चलता रहता है तथा भाषा का विकास होता रहता है।

6. **भाषा मानव के भाव, विचार, अनुभव एवं आकांक्षाओं को सुरक्षित रखती है**– भाषा के माध्यम से हम अपने भाव,विचार, अनुभव एवं आकांक्षाओं को सुरक्षित रखते हैं। प्रत्येक आने वाली पीढ़ी उसमें अपने भाव-विचार, अनुभव एवं आकांक्षाएं जोड़कर अपने से आगे की पीढ़ी को स्थानांतरित कर देती है। भाषा के अभाव में यह सब असंभव है।

भाषा और संचार के बीच अंतर:-

परिभाषा:-

- **संचार:-** संचार भाषण, संकेत, संकेत या व्यवहार द्वारा दो या अधिक लोगों के बीच सूचना का आदान-प्रदान है।
- **भाषा:-** भाषा व्याकरणिक नियमों द्वारा शासित प्रतीकों और अर्थों की 1 साल प्रणाली है।

इंटरेक्शन:-

- **संचार:-** संचार में दो या दो से अधिक लोगों के बीच सहभागिता शामिल है।
- **भाषा:-** भाषा का उपयोग केवल एक व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है।

संचार:-

- **संचार:-** संचार एक विशाल क्षेत्र है।
- **भाषा:-** भाषा संचार की एक विधि है।

प्राथमिकता:-

- **संचार:-** संचार संदेश को अधिक प्राथमिकता देता है।
- **भाषा:-** भाषा संकेतों और प्रतीकों को अधिक महत्व देती है।

परिवर्तन:-

- **संचार:-** संचार की मूल बातें नहीं बदलती हैं।
- **भाषा:-** एक जीवित भाषा स्थिर नहीं रहती है, यह रोज बदलती है।